B.A. Semester-II.

eNotes:- Social Psychology:- MJC (Psychology).

Q:- समाज मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि की व्याख्या कीजिए?

Answer:→ आज के परिप्रेक्ष्य में सर्वेक्षण का बहुत ही महत्व है। समाज के विभिन्न ज्वलन्त मुद्दों को उजागर करने के लिए समय-समय पर समाज मनोवैज्ञानिकों के द्वारा समाज में जाकर बुद्धिजीवियों के द्वारा बहुत सारे कमी और अच्छाई उजागर होते है। इसके आधार पर सुधार हेतु हम कदम उठाते है। समाज मनोवैज्ञानिक काविंग ने सर्वेक्षण के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा है कि "सर्वेक्षण अनुसंधान वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत छोटे आकार की जनसंख्या या सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन जनसंख्याओं से चुने गये प्रतिदर्शों के आधार पर इस उद्देश्य से किया जाता है कि उनमें व्याप्त सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरण के घटनाक्रमों, वितरणों और पारस्परिक अन्तःसम्बन्धों का ज्ञान उपलब्ध हो सके।"

समाज मनोविज्ञान में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग मूल्य, अभिवृत्ति, प्रत्यक्षीकरण आदि में सम्बन्धित समस्याओं का ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से किया जाता है, अनेक प्रकार के सर्वेक्षण द्वारा इन समस्याओं का अध्ययन किया जाता है तथा इसमें आठ प्रकार के सर्वेक्षण मुख्य है:-

(1) सामाजिक पर्यावरण सम्बन्धी सर्वेक्षण
(2) जनसंख्यात्मक सर्वेक्षण
(3) सामाजिक क्रियाओं से सम्बन्धित सर्वेक्षण
(4) पुनरावृत्ति सर्वेक्षण
(5) अभिवृत्ति सम्बन्धी सर्वेक्षण
(6) व्याख्यात्मक सर्वेक्षण
(7) सहकारी सर्वेक्षण
(8) उपनत सर्वेक्षण.

* सर्वेक्षण विधि के मुख्य पक्ष:- Main Aspect of Survey Method)

सर्वेक्षण विधि को निम्नलिखित चरणों के द्वारा पूरा करते है।-

(1) प्रतिचयन योजना:- प्रतिचयन योजना समस्या को निश्चित करने के पश्चात् तैयार की जाती है। इसमें समस्त जनसंख्या को सीमाबद्ध का लिया जाता है तथा तुरन्त बाद प्रतिचयन की व्याख्या आकस्मिक नमूना तैयार करके की जाती है।

(2) समस्या को निश्चित करना :— जिस समस्या के विषय में सबसे पहले सर्वेक्षण करना होता है उसके उद्देश्यों को निश्चित किया जाता है तथा उससे सम्बन्धित यन्त्रों और साधनों को एकत्रित किया जाता है। यथा - सर्वेक्षण के अनुसंधानों में आँकड़ों को एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली अनुसूची, साक्षात्कार, डाक प्रश्नावली आदि इस विधि के प्रमुख यंत्र हैं। समस्या को संकलित व स्पष्ट रूप से देने के लिए इन सबको संकलित करना आवश्यक है।

(3) अनुसूची की रचना !— अनुसूची की सहायता से सर्वेक्षण के अनुसंधान में आँकड़ों का संकलन किया जाता है क्योंकि अनुसूची एक प्रकार की प्रश्नावली होती है। इस अनुसूची को साक्षात्कार या फिर डाक से, किसी भी तरह पूर्ण किया जा सकता है।

(4) आँकड़ो का संकलन !— आँकड़ों को संकलित करने के लिए सर्वेक्षणकर्ता के लिए यह आवश्यक होता है कि वह सामान्यता क्षेत्र को निश्चित करे अर्थात् सर्वेक्षणकर्ता अपनी प्रश्नावली को पूर्ण करवाने के लिए समाज के अन्य व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित करना पड़ता है। इस कार्य को पूर्व योजनानुसार तथा क्रमबद्ध तरीके से सम्पन्न किया जाता है।

(5) आँकड़ो का विश्लेषण :→ सर्वेक्षणकर्ता आँकड़ों का संकलन करने के बाद उनका विश्लेषण करता है। इसके लिए सबसे पहले वह आँकड़ो को सारणीबद्ध करता है तथा उनका अन्तर्वस्तु विश्लेषण करता है।

(6) रिपोर्ट प्रस्तुत करना !— आँकड़ो का विश्लेषण करने के बाद सर्वेक्षणकर्ता उनकी व्याख्या करता है। इस पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करता है।

सर्वेक्षण विधि के लाभ (Merits of Survey Method).

(क) समाज मनोविज्ञान के अध्ययन में ~~सर्व~~ सामाजिक सर्वेक्षण अत्यधिक महत्व रखता है क्योंकि समाज में व्याप्त अनेक समस्याओं का अध्ययन केवल सर्वेक्षण विधि द्वारा ही किया जा सकता है। जैसे !- जनप्रवाद, मतदान, प्रचार से सम्बन्ध रखने वाले व्यवस्था आदि के

(1) सर्वेक्षण विधि में सर्वेक्षणकर्ता इकाई के मनोभावों, विचारों आदि की सही प्रकार जान सकता है; क्योंकि इस विधि में सर्वेक्षणकर्ता इकाई के प्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क में आता है।

(2) जो समस्याएँ विस्तृत एवं व्यापक होती हैं, उनका अध्ययन केवल सर्वेक्षण विधि द्वारा ही किया जा सकता है।

(3) यह विधि मितव्ययी विधि है।

(4) यह विधि अन्य विधियों के मुकाबले अधिक सरल एवं सुविधाजनक है।

(5) इस विधि के द्वारा वस्तुनिष्ठ एवं परिशुद्ध और विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त होते हैं, क्योंकि सर्वेक्षण विधि में अनेक प्रकार के तकनीकी विकास करके इसे वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया जाता है।

सर्वेक्षण विधि के दोष :- [Demerits of Survey Method].

जैसा कि सर्वविदित है कि प्रत्येक चीज में कुछ अच्छाइयाँ होने के साथ-साथ कुछ बुराइयाँ भी होती हैं। अतः इस विधि में भी कुछ दोष हैं, जो इस प्रकार हैं.

(1) इस विधि द्वारा विस्तृत एवं व्यापक अध्ययन तो आसानी से हो सकता है, किन्तु सूक्ष्म एवं गहन विषयों का अध्ययन नहीं हो पाता है।

(2) इस विधि में इकाई द्वारा प्राप्त उत्तर अत्यधिक कृत्रिम होते हैं।

(3) इस विधि में सूक्ष्म समस्याओं का अध्ययन सम्भव नहीं है, जबकि इसके द्वारा साधारण एवं व्यावहारिक समस्याओं का अध्ययन अच्छी प्रकार किया जाता है.

(4) सर्वेक्षण विधि की सीमाएँ साक्षात्कार की सीमाओं से प्रभावित हैं, क्योंकि इसमें आँकड़ा का संकलन साक्षात्कार के माध्यम से किया जाता है.

(5) सर्वेक्षण विधि द्वारा जो परिणाम प्राप्त होते हैं, उन पर Field worker की मनोवृत्तियों, विचारों, पूर्वाग्रहों तथा अध्ययनकर्ता का भी पर्याप्त प्रभाव पड़ता है।

→